



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4  
PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 237]  
No. 237]

नई दिल्ली, मंगलवार, अक्टूबर 30, 2012/कार्तिक 8, 1934  
NEW DELHI, TUESDAY, OCTOBER 30, 2012/KARTIKA 8, 1934

भारतीय रिज़र्व बैंक

अधिसूचना

मुंबई, 16 अक्टूबर, 2012

भारतीय रिज़र्व बैंक वाणिज्यिक पेपर निदेश, 2012

सं. आंत्रप्रवि.पीसीडी.1284/14.01.02/2012-13.—जबकि भारतीय रिज़र्व बैंक, भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934 की धारा 45-जे, 45-के और 45-एल द्वारा प्रदत्त शक्तियों और इसकी ओर से प्रदत्त सभी शक्तियों का उपयोग करते हुए 11 दिसम्बर, 1989 की अधिसूचना आईईसीडी 1/87(सीपी)-89/90 द्वारा गैर-बैंकिंग कंपनियाँ (वाणिज्यिक पेपर के माध्यम से जमा राशियों की स्वीकृति) निदेश, 1989 अधिसूचित करता है;

और जबकि उक्त निदेश क्रमशः 6 सितंबर 1996 की अधिसूचना सं.आईईसीडी.14/08.15.01/1996-97; 17 जून 1998 की अधिसूचना सं.आईईसीडी.21/08.15.01/1997-98 और 10 अक्टूबर 2000 की अधिसूचना सं.आईईसीडी.3/08.15.01/2000-01 द्वारा समय-समय पर संशोधित किये गये हैं;

और जबकि भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम की धारा 45 डब्ल्यू यह प्रदान करती है कि बैंक जनहित में अथवा देश के लाभ में उसकी वित्तीय प्रणाली को विनियमित करने के लिए ब्याज दरों अथवा ब्याज दर उत्पादों और सभी एजेंसियों अथवा उनमें से किसी एक को निदेश जारी करने, प्रतिभूतियों, मुद्रा बाज़ार लिखतों, विदेशी मुद्रा व्युत्पन्नों अथवा उसी प्रकार के अन्य लिखतों, जैसे बैंक समय-समय पर विनिर्दिष्ट करेगा, में लेन-देन करने से संबंधित नीति निर्धारित करे;

और जबकि वाणिज्यिक पेपर, भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम की धारा 45 डब्ल्यू के प्रयोजनों के लिए "मुद्रा बाज़ार लिखत" है;

अतः अब धारा 45 जे, 45के, 45 एल और 45 डब्ल्यू के अंतर्गत प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करते हुए और यहाँ पर इसके पहले संदर्भित अधिसूचनाओं और इससे पहले इस विषय पर इस ओर से जारी अन्य सभी अनुदेशों के अधिक्रमण में, भारतीय रिज़र्व बैंक आवश्यक प्रतीत होने पर जनहित में और बैंक को, देश के लाभ में ऋण और वित्तीय प्रणाली को विनियमित करने के प्रयोजन के लिए संतुष्ट होने पर एतद् द्वारा निम्नलिखित निवेश जारी करता है :-

### 1. संक्षिप्त शीर्षक और प्रारंभ

इन निदेशों को भारतीय रिज़र्व बैंक वाणिज्यिक पेपर निदेश 2012 कहा जाएगा और वे राजपत्र में प्रकाशित होने की तारीख से लागू होंगे ।

### 2. परिभाषा

इन अनुदेशों के प्रयोजन के लिए और जबतक अन्यथा इस संबंध में आवश्यकता नहीं होगी ।

(क) "भारिबैं" का अर्थ भारतीय रिज़र्व बैंक है ।

(ख) "बैंक" का अर्थ है "बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 5 के खंड (सी) में परिभाषित के अनुसार एक बैंकिंग कंपनी अथवा उसके क्रमशः खंड (डीए), खंड (एनसी) और खंड (एनडी) में परिभाषित के अनुसार "तदनुसूची नया बैंक" "भारतीय स्टेट बैंक" अथवा एक "सहायक बैंक" और उक्त अधिनियम की धारा 56 के साथ पठित धारा 5 के खंड (सीसीआई) में परिभाषित के अनुसार "सहकारी बैंक" ।

(ग) "अनुसूचित बैंक" का अर्थ है भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934 की दूसरी अनुसूची में शामिल कोई भी बैंक ।

(घ) "अखिल भारतीय वित्तीय संस्थान" (एफआई) का अर्थ है समय-समय पर संशोधित एक्सपोजर मानदंडों पर 2 जुलाई 2012 के भारिबैं मास्टर परिपत्र डीबीओडी.सं.डीआईआर.बीसी.3/13.03.00/2012-13 के अनुबंध 3 की निर्दिष्ट सूची में विनिर्दिष्ट अखिल भारतीय वित्तीय संस्थान ।

(ङ.) प्राथमिक व्यापारी (पीडी) का अर्थ है ऐसी गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी, जो समय-समय पर संशोधित के अनुसार जारी 29 मार्च 1995 के "सरकारी प्रतिभूति बाज़ार में पीडी के लिए मार्गदर्शी सिद्धांतों" के अनुसार भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा जारी प्राथमिक व्यापारी के रूप में प्राधिकरण का वैध पत्र रखती हो ।

(च) "कंपनी" का अर्थ है कंपनी अधिनियम, 1956 की धारा 3 में परिभाषित किये गये अनुसार एक कंपनी ।

(छ) जारीकर्ता और भुगतान करनेवाला एजेंट (आईपीए) का अर्थ है आईपीए के रूप में कार्यरत अनुसूचित बैंक ।

- (ज) "सीआरए" का अर्थ है भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड के साथ दर्ज की गई ऋण श्रेणी निर्धारण एजेंसी (क्रेडिट रेटिंग एजेंसी) ।
- (झ) "सीपी" का अर्थ है इन निदेशों के अनुसरण में जारी किया गया वाणिज्यिक पेपर।
- (ट) यहाँ पर प्रयोग में लाये गये, पर परिभाषित न किये गये और भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934 में परिभाषित शब्द और अभिव्यक्तियों का अर्थ उक्त अधिनियम में दिये गये उनके उसी अर्थ के समान होगा ।

### 3. वाणिज्यिक पेपर (सीपी) को जारी करने के लिए पात्रता

- (क) कंपनियों, प्राथमिक व्यापारियों और एफआई के लिए पैरा 4 के अंतर्गत विनिर्दिष्ट समग्र सीमाओं के भीतर वाणिज्यिक पेपर के माध्यम से लघु अवधि संसाधन जुटाने की अनुमति है ।
- (ख) कोई भी कंपनी वाणिज्यिक पेपर जारी करने के लिए पात्र होगी बशर्तः
- (i) कंपनी का मूर्त शुद्ध मूल्य हाल ही के लेखापरीक्षित तुलन-पत्र के अनुसार 4 करोड़ रुपये से कम न हो;
  - (ii) कंपनी के लिए बैंक/बैंकों अथवा वित्तीय संस्थाओं द्वारा कार्यशील पूँजी स्वीकृत की गई हो और
  - (iii) कंपनी के उधार खाते को वित्तपोषक बैंक/संस्था द्वारा मानक आस्ति के रूप में श्रेणीबद्ध किया गया हो ।

### 4. वाणिज्यिक पेपर जारी करना - ऋण वृद्धि, सीमा आदि

- (क) वाणिज्यिक पेपर 'स्वतंत्र' (स्टैंड अलोन) उत्पाद के रूप में जारी किया जाना चाहिए । इसके साथ ही, बैंकों और वित्तीय संस्थाओं के लिए वाणिज्यिक पेपर जारीकर्ताओं के लिए आपाती सुविधा प्रदान करना किसी भी तरीके से बाध्यकारी नहीं होना चाहिए ।
- (ख) बैंक और वित्तीय संस्थाएँ अपने वाणिज्यिक निर्णय पर आधारित, उन्हें लागू विवेकपूर्ण मानदंडों के अधीन, अपने संबंधित बोर्डों के अनुमोदन के साथ आपाती सहायता/ऋण प्रदान करना, बैंक-स्टॉप सुविधा आदि वाणिज्यिक पेपर जारी करने के लिए ऋण वृद्धि के उपाय से चुन सकते हैं ।
- (ग) गैर-बैंकिंग इकाइयों (कंपनियों को मिलाकर) वाणिज्यिक पेपर जारी करने के लिए ऋण वृद्धि के लिए बिनाशर्त और अविकल्पी गारंटी प्रदान कर सकते हैं बशर्त
- (i) जारीकर्ता वाणिज्यिक पेपर जारी करने के लिए अर्हता मानदंड पूरा करे ।
  - (ii) गारंटीदाता को क्रेडिट रेटिंग एजेंसी द्वारा जारीकर्ता से एक नोच उच्चतर क्रेडिट रेटिंग दी गई हो ।

- (iii) वाणिज्यिक पेपर के लिए प्रस्ताव दस्तावेज में गारंटीदाता कंपनी का शुद्ध मूल्य, उन कंपनियों के नाम जिनको गारंटीदाता ने समान गारंटियाँ जारी की हों, गारंटीदाता कंपनी द्वारा प्रस्तावित गारंटियों की सीमा और वे शर्तें जिसके अंतर्गत गारंटियाँ बुलायी जाएंगी, उचित रूप से प्रकट किया गया हो ।
- (घ) वाणिज्यिक पेपर की सकल राशि जो जारीकर्ता द्वारा जारी की जा सकती है, वह हमेशा निदेशक मंडल द्वारा अनुमोदित सीमा के भीतर अथवा क्रेडिट रेटिंग एजेंसी द्वारा विनिर्दिष्ट रेटिंग के लिए निर्दिष्ट मात्रा, जो भी कम हो, होनी चाहिए ।
- (ङ.) बैंकों और वित्तीय संस्थाओं को वाणिज्यिक पेपर सहित कंपनी के वित्तपोषण के संसाधन नमूने को विधिवत ध्यान में लेते हुए कार्यशील पूँजी सीमाओं को निर्धारित करने की लोचनीयता होनी चाहिए ।
- (च) वित्तीय संस्थाओं द्वारा वाणिज्यिक पेपर का निर्गम भारतीय रिज़र्व बैंक, बैंकिंग परिचालन और विकास विभाग द्वारा वित्तीय संस्थाओं के लिए संसाधन जुटाने के मानदंडों पर समय-समय पर निर्धारित/अद्यतन किये गये जारी मास्टर परिपत्र में निर्धारित समग्र सीमा के भीतर हो ।
- (छ) जारी किये जाने के लिए प्रस्तावित वाणिज्यिक पेपर की कुल राशि जिस तारीख को जारीकर्ता अंशदान के लिए निर्गम खोलता है उस तारीख से दो सप्ताह की अवधि के भीतर जुटाना चाहिए । वाणिज्यिक पेपर किसी एक ही तारीख को अथवा विभिन्न तारीखों के भागों में जारी किया जाए बशर्ते बादवाले मामले में प्रत्येक वाणिज्यिक पेपर की परिपक्वता तारीख एक ही हो ।
- (ज) प्रत्येक वाणिज्यिक पेपर के निर्गम को और किसी भी वाणिज्यिक पेपर के प्रत्येक नवीकरण को नया निर्गम माना जाए ।

#### 5. वाणिज्यिक पेपर में निवेश के लिए पात्रता

- (क) व्यक्ति, बैंक, अन्य कंपनी निकाय (भारत में पंजीकृत अथवा निगमित) और अनिगमित निकाय, अनिवासी भारतीय और विदेशी संस्थागत निवेशक वाणिज्यिक पेपर में निवेश करने के लिए पात्र हैं ।
- (ख) विदेशी संस्थागत निवेशक वाणिज्यिक पेपर में निवेश करने के लिए पात्र हैं बशर्ते
- (i) ऐसी स्थितियाँ उनके लिए भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (सेबी) द्वारा बनाई गई हो
  - (ii) विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम, 1999, विदेशी मुद्रा (जमाराशि) विनियमन, 2000 और विदेशी मुद्रा प्रबंधन (भारत के बाहर के निवासी व्यक्ति द्वारा किसी प्रतिभूति का अंतरण अथवा निर्गम) विनियम, 2000, जैसा कि समय-समय पर संशोधित किया गया हो के उपबंधों का अनुपालन ।

## 6. लिखत का फॉर्म, जारीकरण का प्रकार और प्रतिदान

### 6.1. स्वरूप

- (क) वाणिज्यिक पेपर एक प्रॉमिसरी नोट के रूप जारी किया जाना चाहिए (अनुसूची I में इस दिशा में विनिर्दिष्ट किये गये अनुसार) और सेबी द्वारा अनुमोदित और सेबी के साथ पंजीकृत किसी भी निक्षेपागार के माध्यम से भौतिक रूप में अथवा डिमटेरियलाइज्ड रूप में रखा गया हो बशर्ते भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा विनियमित इकाइयाँ वाणिज्यिक पेपर में लेन-देन कर सकें और उन्हें ऐसे निक्षेपागार के माध्यम से केवल डिमटेरियलाइज्ड रूप में रख सकें।
- (ख) भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा विनियमित इकाइयों द्वारा सभी नये निवेश केवल डिमटेरियलाइज्ड रूप में होने चाहिए।
- (ग) वाणिज्यिक पेपर 5 लाख रुपये के मूल्यवर्ग और उसके गुणकों में जारी किये जाने चाहिए। एकल निवेशक द्वारा निवेश की गई राशि 5 लाख रुपये से (अंकित मूल्य) कम नहीं होनी चाहिए।
- (घ) वाणिज्यिक पेपर अंकित मूल्य के बट्टे पर जारी किया जाए जैसा कि जारीकर्ता द्वारा निर्धारित किया जाए।
- (ङ.) किसी भी जारीकर्ता को वाणिज्यिक पेपर का निर्गम हामींदारीकृत अथवा सह-स्वीकृत नहीं होगा।
- (च) ऑपशन्स (कॉल/पुट) वाणिज्यिक पेपर में अनुमत नहीं हैं।

### 6.2. तात्पर्य

- (क) वाणिज्यिक पेपर जारी करने की तारीख से न्यूनतम 7 दिवस और अधिकतम एक वर्ष तक की परिपक्वताओं के लिए जारी किए जाएं।
- (ख) वाणिज्यिक पेपर की परिपक्वता की तारीख उस तारीख से परे नहीं जानी चाहिए जिस तारीख तक जारीकर्ता की क्रेडिट रेटिंग वैध हो।

### 6.3. जारी करने के लिए प्रक्रिया

- (क) प्रत्येक जारीकर्ता को वाणिज्यिक पेपर के जारीकरण के लिए आईपीए नियुक्त करना चाहिए।
- (ख) जारीकर्ता को चाहिए कि वे संभाव्य निवेशकों को उनके मानक बाज़ार मूल्य के अनुसार उसकी अद्यतन वित्तीय स्थिति स्पष्ट करें।
- (ग) निवेशक और जारीकर्ता के बीच लेन-देन की पुष्टि का विनिमय के बाद, जारीकर्ता को आईपीए के माध्यम से निक्षेपागार के साथ निवेशक के डिमैट खाते में वाणिज्यिक पेपर जमा करने के लिए व्यवस्था करनी चाहिए।
- (घ) जारीकर्ता को आईपीए से प्राप्त इस आशय के प्रमाणपत्र की एक प्रति निवेशक को देनी चाहिए कि जारीकर्ता ने आईपीए के साथ वैध करार किया है और दस्तावेज

सही हैं । (अनुसूची II)

#### 6.4. रेटिंग आवश्यकता

पात्र सहभागियों/जारीकर्ताओं को सेबी द्वारा पंजीकृत किसी भी क्रेडिट रेटिंग एजेंसी से वाणिज्यिक पेपर के जारीकरण के लिए क्रेडिट रेटिंग प्राप्त करनी चाहिए । न्यूनतम क्रेडिट रेटिंग, रेटिंग सिम्बॉल के अनुसार ए-3 और सेबी द्वारा परिभाषित होनी चाहिए। जारीकर्ता को वाणिज्यिक पेपर जारी करते समय यह सुनिश्चित करना चाहिए कि प्राप्त किया गया रेटिंग वर्तमान में किया गया हो और उसकी पुनरीक्षा का समय नहीं आया हो।

#### 6.5. निवेश/प्रतिदान

(क) वाणिज्यिक पेपर में निवेशक (प्राथमिक अंशदाता) को चाहिए कि वह आईपीए के माध्यम से जारीकर्ता के खाते में वाणिज्यिक पेपर के भुनाए गए मूल्य को अदा करें ।

(ख) भौतिक रूप में वाणिज्यिक पेपर धारण करनेवाले निवेशक को, परिपक्वता के बाद, आईपीए के माध्यम से जारीकर्ता को भुगतान के लिए लिखत प्रस्तुत करना चाहिए ।

(ग) डिमटेरियलाइज्ड रूप में वाणिज्यिक पेपर के धारक को वाणिज्यिक पेपर का प्रतिदान और उससे संबंधित भुगतान आईपीए के माध्यम से करें ।

#### 6.6. प्रलेखन प्रक्रिया

(क) वाणिज्यिक पेपर जारी करने के लिए मानकीकृत क्रियाविधि और प्रलेखन अंतर्राष्ट्रीय सर्वोत्तम प्रथाओं के अनुरूप निर्धारित आय मुद्रा बाज़ार और व्युत्पन्न (डेरिवेटिव्स) संघ (फिमडा) के परामर्श से निर्धारित किए गए हैं ।

(ख) जारीकर्ता/आईपीएज़ को भारतीय रिज़र्व बैंक के अनुमोदन के साथ समय-समय पर फिमडा द्वारा जारी परिचालनात्मक मार्गदर्शी सिद्धांतों का अनुपालन करना चाहिए।

#### 7. वाणिज्यिक पेपर का व्यापार और निपटान

(क) वाणिज्यिक पेपर में सभी ओटीसी व्यापार के बारे में व्यापार के 15 मिनट के भीतर फिमडा रिपोर्टिंग मंच को रिपोर्ट करना चाहिए ।

(ख) वाणिज्यिक पेपर में ओटीसी व्यापार नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) के समाशोधन गृह के माध्यम से निपटाए जाने चाहिए अर्थात् दी नेशनल सिक्युरिटीज क्लियरिंग कारपोरेशन लिमि. (एनएससीसीएल) और बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) अर्थात् इंडियन क्लियरिंग कारपोरेशन लिमि. (आईसीसीएल) के माध्यम से निपटाए गए हो ।

(ग) ओटीसी व्यापारों के लिए निपटान चक्र या तो टी + 0 होना चाहिए अथवा टी + 1 हो

#### 8. वाणिज्यिक पेपर की पुनर्खरीद

(क) जारीकर्ता उनके द्वारा निवेशकों को जारी किए गए वाणिज्यिक पेपरों की

परिपक्वता से पूर्व पुनर्खरीद कर सकते हैं ।

- (ख) वाणिज्यिक पेपर की पुनर्खरीद गौण बाजार के माध्यम से और प्रचलित बाजार दर पर की जानी चाहिए ।
- (ग) वाणिज्यिक पेपर जारी करने की तारीख से 7 दिन की न्यूनतम अवधि से पूर्व वापस नहीं लाना चाहिए ।
- (घ) जारीकर्ता को, की गई पुनर्खरीद के बारे में आईपीए को सूचित करना चाहिए ।
- (ङ.) वाणिज्यिक पेपर की पुनर्खरीद निदेशक मंडल से अनुमोदन प्राप्त होने पर की जानी चाहिए ।

#### 9. ड्यूटियाँ और बाध्यताएँ

जारीकर्ता, आईपीए और सीआरए की ड्यूटियाँ और बाध्यताएँ नीचे निर्धारित की गई हैं :-

##### I. जारीकर्ता

जारीकर्ता को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वाणिज्यिक पेपर के जारीकरण के लिए निर्धारित मार्गदर्शी सिद्धान्त और क्रियाविधिओं का कड़ाई से पालन किया जाता है ।

##### II. आईपीए

- (क) आईपीए को सुनिश्चित करना चाहिए कि जारीकर्ता को भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा निर्धारित किये गये अनुसार न्यूनतम आवश्यक क्रेडिट रेटिंग है और वाणिज्यिक पेपर के जारी करने के माध्यम से संग्रहित राशि विनिर्दिष्ट रेटिंग के लिए सीआरए द्वारा निर्दिष्ट मात्रा अथवा निदेशक मंडल द्वारा अनुमोदित, जो भी कम हो, के भीतर है।
- (ख) आईपीए को यह प्रमाणित करना चाहिए कि उसने जारीकर्ता (अनुसूची II) के साथ वैध करार किया गया है ।
- (ग) आईपीए को यह सत्यापित करना चाहिए कि जारीकर्ता द्वारा प्रस्तुत दस्तावेज अर्थात् बोर्ड संकल्प की प्रतियाँ, प्राधिकृत निष्पादकों के हस्ताक्षर (जब वाणिज्यिक पेपर भौतिक रूप में जारी किया गया हो) सही हैं और इस आशय का एक प्रमाणपत्र जारी किया जाना चाहिए ।
- (घ) आईपीए द्वारा सत्यापित मूल-दस्तावेजों की प्रमाणित प्रतियाँ, आईपीए की अभिरक्षा में रखी जानी चाहिए ।
- (ङ.) आईपीए के रूप में कार्यरत सभी अनुसूचित बैंकों को वाणिज्यिक पेपर के जारीकरण की तारीख से दो दिन के भीतर भारतीय रिज़र्व बैंक के ऑनलाइन रिटर्न्स फाइलिंग सिस्टम (ओआरएफएस) मॉड्यूल पर

वाणिज्यिक पेपर के जारीकरण के ब्योरे रिपोर्ट करने चाहिए ।

(च) आईपीएज़ को वाणिज्यिक पेपर के पुनर्भुगतान में चूक होने पर उसके संपूर्ण ब्योरे मुख्य महाप्रबंधक, वित्तीय बाज़ार विभाग, भारतीय रिज़र्व बैंक, केंद्रीय कार्यालय, फोर्ट, मुंबई-400 001 ([reportfmd@rbi.org.in](mailto:reportfmd@rbi.org.in)) को इन निदेशों की अनुसूची III में दिए गए फार्मेट में रिपोर्ट करना चाहिए ।

(छ) आईपीएज़ को जारीकर्ता द्वारा वाणिज्यिक पेपर की पुनर्खरीद के सभी मामले भी मुख्य महाप्रबंधक, वित्तीय बाज़ार विभाग, भारतीय रिज़र्व बैंक, केंद्रीय कार्यालय, फोर्ट, मुंबई-400 001 ([reportfmd@rbi.org.in](mailto:reportfmd@rbi.org.in)) को इन निदेशों की अनुसूची IV में दिए गए फार्मेट में रिपोर्ट करना चाहिए ।

### III. सीआरए

(क) सीआरएज़ को पूंजी बाज़ार लिखत के रेटिंग करने के लिए सीआरए के लिए सेबी द्वारा निर्धारित आचार संहिता का पालन करना चाहिए जो वाणिज्यिक पेपर के रेटिंग के लिए लागू होगी ।

(ख) सीआरएज़ को जारीकर्ता की क्षमता के बारे में उनके बोध पर निर्भर रेटिंग की वैधता अवधि निर्धारित करने के लिए विवेकाधिकार होना चाहिए और रेटिंग के समय उन्हें स्पष्ट रूप से यह निर्दिष्ट करना चाहिए कि क्या रेटिंग की समीक्षा का समय हो गया है ।

(ग) सीआरएज़ को जारीकर्ताओं को दिए गए रेटिंग की सूक्ष्म रूप से निगरानी रखनी चाहिए और साथ-साथ नियमित अंतराल पर रिकार्ड का ध्यान रखना चाहिए तथा उनके प्रकाशन और वेबसाइट के माध्यम से रेटिंग में संशोधन करने चाहिए ।

### 10. कुछ अन्य निदेशों का लागू न होना

गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियाँ सरकारी जमाराशियों की स्वीकार्यता (रिज़र्व बैंक) निवेश, 1998 में अंतर्निहित, कोई भी तथ्य इन निदेशों के अनुसरण में किसी भी वाणिज्यिक पेपर के निर्गम द्वारा, किसी भी गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों द्वारा जमाराशियों की स्वीकार्यता के लिए लागू नहीं होगा ।

11. सभी वर्तमान निदेश और मार्गदर्शी सिद्धांत तत्काल प्रभाव से अधिक्रमित हो गये हैं परंतु उन वाणिज्यिक पेपरों को लागू होना जारी रहेगा जो लागू होने की तदनुसूची तारीखों से पहले जारी किये गए हैं ।

आर. गांधी, कार्यपालक निदेशक

[विज्ञापन III/4/38/12-असा.]



**अनुसूची I**  
(पैरा 6.1.ए देखें)

**वाणिज्यिक पेपर (सीपी) का प्रोफार्मा**

जिस राज्य में जारी किया जाना है वहाँ लागू दर के अनुसार स्टाम्प लगाया जाए

(जारीकर्ता कंपनी/संस्था का नाम)

क्रम सं.

\_\_\_\_\_ में जारी किया गया जारी करने की तारीख \_\_\_\_\_  
(स्थान)

परिपक्वता की तारीख \_\_\_\_\_ अनुग्रह दिनों के बिना ।  
(यदि ऐसी तारीख अवकाश के दिन आती हो, तो भुगतान तत्काल अगले कार्यदिवस को किया जाना चाहिए)

प्राप्त मूल्य के लिए \_\_\_\_\_ एतद्वारा

(जारीकर्ता कंपनी/संस्था) (निवेशक का नाम)  
को अथवा ऊपर विनिर्दिष्ट किये गये अनुसार परिपक्वता की तारीख को इस वाणिज्यिक पेपर को  
को इस वाणिज्यिक पेपर को प्रस्तुत करने और

(जारीकर्ता और अदाकर्ता एजेंट का नाम)  
लौटाने पर रु. \_\_\_\_\_ (शब्दों में) की राशि अदा करने का वचन देती है ।

\_\_\_\_\_ के लिए और की ओर से  
(जारीकर्ता कंपनी/संस्था का नाम)

(प्राधिकृत हस्ताक्षरकर्ता - एक या अधिक)

इस वाणिज्यिक पेपर पर सभी परांकन स्वच्छ और सुस्पष्ट होने चाहिए । प्रत्येक परांकन उसके लिए आबंटित जगह के भीतर लिखा जाना चाहिए ।

\_\_\_\_\_ अथवा नामक के भीतर राशि  
(अंतरिती का नाम)

के लिए और की ओर से

\_\_\_\_\_ (अंतरित करनेवाले का नाम)

- 1.
- 2.
- 3.
- 4.

4143 GI/12-3

**अनुसूची II**

(पैरा 6.3.डी/9.II.बी देखें)

**आईपीए प्रमाणपत्र**

हमारे पास \_\_\_\_\_ के साथ वैध आईपीए प्रमाणपत्र है ।  
(जारीकर्ता कंपनी/संस्था का नाम)

2. हमने दस्तावेज अर्थात् बोर्ड संकल्प और (जारीकर्ता कंपनी/संस्था का नाम) द्वारा प्रस्तुत क्रेडिट रेटिंग एजेंसी द्वारा जारी प्रमाणपत्र सत्यापित किया है और हम यह प्रमाणित करते हैं कि दस्तावेज सही हैं । मूल दस्तावेजों की प्रमाणित प्रतियाँ हमारी अभिरक्षा में रखी गयी हैं ।

3. \*हम यह भी प्रमाणित करते हैं कि रु. \_\_\_\_\_ ( \_\_\_\_\_ रुपये)  
(शब्दों में) के लिए क्रम सं. \_\_\_\_\_ दिनांक \_\_\_\_\_ के  
संलग्न वाणिज्यिक पेपरों के निष्पादकों के हस्ताक्षर (जारीकर्ता कंपनी/संस्था) द्वारा भरे गये  
नमूना हस्ताक्षर के साथ मेल खाते हैं ।

(प्राधिकृत हस्ताक्षरकर्ता - एक या अधिक)

(जारीकर्ता और अदाकर्ता का नाम और पता)

पता :

तारीख :

\* (भौतिक रूप में वाणिज्यिक पेपर के लिए लागू/जो लागू न हो उसे काट दें)

**अनुसूची III**  
(पैरा 9.II.एफ देखें)

**वाणिज्यिक पेपर (सीपी) की चुकौती में हुई चूक का विवरण**

जारीकर्ता का नाम	सीपी जारी करने की तिथि	राशि (करोड़ रुपए में)	चुकौती की रेटिंग	प्रारंभिक रेटिंग	अद्यतन क्रेडिट रेटिंग	क्या सीपी के निर्गम को आपात सहायता/ ऋण बैंक स्टॉप सुविधा/ गारंटी उपलब्ध है	यदि हाँ तो, कॉलम (7) में उल्लिखित सुविधा किस इकाई ने प्रदान की है	क्या कॉलम (7) में उल्लिखित सुविधा दी गई है और भुगतान किया गया है
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)

(प्राधिकृत हस्ताक्षरकर्ता - एक या अधिक)

**अनुसूची IV**  
(पैरा 9.II.जी देखें)

**वाणिज्यिक पेपर की पुनर्खरीद रिपोर्टिंग**

व्यापार की तारीख	जारीकर्ता	आईएसआईएन	जारी करने की तारीख	परिपक्वता की तारीख	राशि (करोड़ रुपये में)	# पुनर्खरीद का स्वरूप

# यदि जारीकर्ता द्वारा वाणिज्यिक पेपर निष्प्रभ कर दिया हो, तो उसे निर्दिष्ट करें।  
(प्राधिकृत हस्ताक्षरकर्ता - एक या अधिक)

**RESERVE BANK OF INDIA****NOTIFICATION**

Mumbai, the 16th October, 2012

**Reserve Bank Commercial Paper Directions, 2012**

**No. IDMD. PCD. 1284/14.01.02/2012-13.**—Whereas, the Reserve Bank of India, in exercise of the powers conferred by Sections 45J, 45K, 45L of the Reserve Bank of India Act, 1934, and of all the powers enabling it in this behalf, notified the Non-Banking Companies (Acceptance of Deposits through Commercial Paper) Directions, 1989 vide Notification No. IECD. 1/87(CP)-89/90, dated December 11, 1989;

**And whereas** the said directions having been amended from time to time vide Notification No. IECD. 14/08.15.01/96-97 dated September 6, 1996; Notification No. IECD. 21/08.15.01/97-98 dated June 17, 1998, and Notification No. IECD. 3/08.15.01/2000-2001 dated October 10, 2000 respectively;

**And whereas** Section 45W of the Reserve Bank of India Act provides that the Bank may, in public interest, or to regulate the financial system of the country to its advantage, determine the policy relating to interest rates or interest rate products and give directions in that behalf to all agencies or any of them, dealing in securities, money market instruments, foreign exchange, derivatives, or other instruments of like nature as the Bank may specify from time to time;

**And whereas** Commercial Paper is a 'money market instrument' for the purposes of Section 45W of the Reserve Bank of India Act;

**Now therefore**, in exercise of the powers conferred under sections 45J, 45K, 45L and 45W, and in supercession of the Notifications referred hereinabove, and all other instructions issued in this behalf, on the subject, the Reserve Bank of India, having considered it necessary in the public interest and being satisfied that for the purpose of enabling the Bank to regulate the credit and financial system to the advantage of the country, hereby issues the following directions, namely:-

**1.Short Title and Commencement**

These directions shall be called the Reserve Bank Commercial Paper Directions 2012 and shall come into force on the date of their publication in the Official gazette.

**2.Definitions**

For the purpose of these directions, unless the context otherwise requires:

- a. 'RBI' means the Reserve Bank of India.
- b. 'Banks' means a banking company as defined in clause (c) of Section 5 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949) or a "corresponding new bank", "State Bank of India" or a "subsidiary bank" as defined in clause (da), clause (nc) and clause (nd) respectively thereof and includes a "cooperative bank" as defined in clause (cci) of Section 5 read with Section 56 of the said Act.
- c. 'Scheduled bank' means a bank included in the Second Schedule of the RBI Act, 1934.
- d. 'All India Financial Institution' (FI) means an all India Financial Institution specified in the list indicated at Annex 3 to the RBI Master Circular DBOD.No.Dir.BC.3/13.03.00/2012-13 dated July 02, 2012 on Exposure Norms as amended from time to time.
- e. Primary Dealer (PD) means a Non-Banking Financial Company (NBFC) that holds a valid letter of authorisation as a PD issued by the Reserve Bank, in terms of the "Guidelines for Primary Dealer in Government Securities Market" dated March 29, 1995, as amended from time to time.
- f. 'Company' means a company as defined in section 3 of the Companies Act, 1956.
- g. 'Issuing and Paying Agent (IPA)' means a Scheduled Bank acting as an IPA.
- h. 'CRA' means a Credit Rating Agency registered with Securities Exchange Board of India.
- i. 'CP' means Commercial paper issued in accordance with these directions.
- j. Words and expressions used but not defined herein and defined in the Reserve Bank of India Act, 1934 shall have the same meaning as assigned to them in the said Act.

**3. Eligibility for Issue of CP:**

- a. Companies, PDs and FIs are permitted to raise short term resources through CP within the umbrella limits specified under paragraph 4.

4143 GE/12-4

- b. A company would be eligible to issue CP provided:
  - i. the tangible net worth of the company, as per the latest audited balance sheet, is not less than Rs.4 crore;
  - ii. the company has been sanctioned working capital limit by bank/s or FIs; and
  - iii. the borrowal account of the company is classified as a Standard Asset by the financing bank/institution.

#### 4. Issue of CP – Credit enhancement, limits, etc.

- a. CP shall be issued as a 'stand alone' product. Further, it would not be obligatory in any manner on the part of the banks and FIs to provide stand-by facility to the issuers of CP.
- b. Banks and FIs may, based on their commercial judgement, subject to the prudential norms as applicable to them, with the specific approval of their respective Boards, choose to provide stand-by assistance/credit, back-stop facility etc. by way of credit enhancement for a CP issue.
- c. Non-bank entities (including corporates) may provide unconditional and irrevocable guarantee for credit enhancement for CP issue provided:
  - i. the issuer fulfils the eligibility criteria prescribed for issuance of CP;
  - ii. the guarantor has a credit rating at least one notch higher than the issuer given by an approved CRA; and
  - iii. the offer document for CP properly discloses the net worth of the guarantor company, the names of the companies to which the guarantor has issued similar guarantees, the extent of the guarantees offered by the guarantor company, and the conditions under which the guarantee will be invoked.
- d. The aggregate amount of CP that can be issued by an issuer shall at all times be within the limit as approved by its Board of Directors or the quantum indicated by the CRA for the specified rating, whichever is lower.
- e. Banks and FIs shall have the flexibility to fix working capital limits, duly taking into account the resource pattern of company's financing, including CP.
- f. An issue of CP by an FI shall be within the overall umbrella limit prescribed in the Master Circular on Resource Raising Norms for FIs, issued by the Reserve Bank of India, Department of Banking Operations and Development, as prescribed/ updated from time-to-time.
- g. The total amount of CP proposed to be issued should be raised within a period of two weeks from the date on which the issuer opens the issue for subscription. CP may be issued on a single date or in parts on different dates provided that in the latter case, each CP shall have the same maturity date.

- h. Every issue of CP, and every renewal of a CP, shall be treated as a fresh issue.

### 5. Eligibility for Investment in CP

- a. Individuals, banks, other corporate bodies (registered or incorporated in India) and unincorporated bodies, Non-Resident Indians and Foreign Institutional Investors (FIIs) shall be eligible to invest in CP.
- b. FIIs shall be eligible to invest in CPs subject to (i) such conditions as may be set for them by Securities Exchange Board of India (SEBI) and (ii) compliance with the provisions of the Foreign Exchange Management Act, 1999, the Foreign Exchange (Deposit) Regulations, 2000 and the Foreign Exchange Management (Transfer or Issue of Security by a Person Resident Outside India) Regulations, 2000, as amended from time to time.

### 6. Form of the Instrument, mode of issuance and redemption

#### 6.1 Form

- a. CP shall be issued in the form of a promissory note (as specified in Schedule I to these Directions) and held in physical form or in a dematerialized form through any of the depositories approved by and registered with SEBI, provided that all RBI regulated entities can deal in and hold CP only in dematerialised form through such depositories.
- b. Fresh investments by all RBI-regulated entities shall be only in dematerialised form.
- c. CP shall be issued in denominations of ₹ 5 lakh and multiples thereof. The amount invested by a single investor should not be less than ₹ 5 lakh (face value).
- d. CP shall be issued at a discount to face value as may be determined by the issuer.
- e. No issuer shall have the issue of CP underwritten or co-accepted.
- f. Options (call/put) are not permitted on CP.

#### 6.2 Tenor

- a. CP shall be issued for maturities between a minimum of 7 days and a maximum of up to one year from the date of issue.
- b. The maturity date of the CP shall not go beyond the date up to which the credit rating of the issuer is valid.

#### 6.3. Procedure for Issuance

- a. Every issuer must appoint an IPA for issuance of CP.
- b. The issuer should disclose to the potential investors, its latest financial position as per the standard market practice.

- c. After the exchange of confirmation of the deal between the investor and the issuer, the issuer shall arrange for crediting the CP to the Demat account of the investor with the depository through the IPA.
- d. The issuer shall give to the investor a copy of IPA certificate to the effect that the issuer has a valid agreement with the IPA and documents are in order (Schedule II).

#### 6.4 Rating Requirement

Eligible participants/issuers shall obtain credit rating for issuance of CP from any one of the SEBI registered CRAs. The minimum credit rating shall be 'A3' as per rating symbol and definition prescribed by SEBI. The issuers shall ensure at the time of issuance of the CP that the rating so obtained is current and has not fallen due for review.

#### 6.5. Investment / Redemption

- a. The investor in CP (primary subscriber) shall pay the discounted value of the CP to the account of the issuer through the IPA.
- b. The investor holding the CP in physical form shall, on maturity, present the instrument for payment to the issuer through the IPA.
- c. The holder of a CP in dematerialised form shall get the CP redeemed and receive payment through the IPA.

#### 6.6 Documentation Procedures

- a. Standardised procedures and documentation for CPs are prescribed in consultation with Fixed Income Money Market and Derivatives Association of India (FIMMDA) in consonance with international best practices.
- b. Issuers /IPAs shall follow the operational guidelines issued by FIMMDA, from time to time, with the approval of RBI.

#### 7. Trading and Settlement of CP

- a. All OTC trades in CP shall be reported within 15 minutes of the trade to FIMMDA reporting platform.
- b. OTC trades in CP shall be settled through the clearing house of the National Stock Exchange (NSE), i.e., the National Securities Clearing Corporation Limited (NSCCL) and the clearing house of the Bombay Stock Exchange (BSE), i.e., Indian Clearing Corporation Limited (ICCL), as per the norms specified by NSCCL and ICCL from time to time.
- c. The settlement cycle for OTC trades in CP shall either be T+0 or T+1.



**8. Buyback of CP**

- a. Issuers may buyback the CP, issued by them to the investors, before maturity.
- b. Buyback of CP shall be through the secondary market and at prevailing market price.
- c. The CP shall not be bought back before a minimum period of 7 days from the date of issue.
- d. Issuer shall intimate the IPA of the buyback undertaken.
- e. Buyback of CPs should be undertaken after taking approval from the Board of Directors.

**9. Duties and Obligations**

The duties and obligations of the Issuer, IPA and CRA are set out below:

**I. Issuer**

The issuer shall ensure that the guidelines and procedures laid down for the issuance of CP are strictly adhered to.

**II. IPA**

- a. The IPA shall ensure that the issuer has the minimum credit rating as stipulated by RBI and the amount mobilised through issuance of CP is within the quantum indicated by CRA for the specified rating or as approved by its Board of Directors, whichever is lower.
- b. The IPA shall certify that it has a valid agreement with the issuer (Schedule II).
- c. The IPA shall verify that all the documents submitted by the issuer, viz., copy of board resolution, signatures of authorised executants (when CP is issued in physical form) are in order and shall issue a certificate to this effect.
- d. Certified copies of original documents, verified by the IPA, shall be held in the custody of IPA.
- e. All scheduled banks, acting as IPAs, shall report the details of issuance of CP on the Online Returns Filing System (ORFS) module of the RBI within two days from the date of issuance of the CP.
- f. IPAs, shall immediately report, on occurrence, full particulars of defaults in repayment of CP to the Chief General Manager, Financial Markets Department, Reserve Bank of India, Central Office, Fort, Mumbai-400001 ([reportfmd@rbi.org.in](mailto:reportfmd@rbi.org.in)) in the format as given in Schedule III of these directions.
- g. IPAs shall also report all instances of buyback of CPs undertaken by the issuer to the Chief General Manager, Financial Markets Department, Reserve Bank of India, Central Office, Fort, Mumbai-400001 ([reportfmd@rbi.org.in](mailto:reportfmd@rbi.org.in)) in the format as given in Schedule IV of these directions.

**III. CRA**

- a. CRAs shall abide by the Code of Conduct prescribed by the SEBI for CRAs for undertaking rating of capital market instruments, which shall be applicable for rating CPs.
- b. The CRAs shall have the discretion to determine the validity period of the rating depending upon their perception about the strength of the issuer; and they shall, at the time of rating, clearly indicate the date when the rating is due for review.
- c. The CRAs shall closely monitor the rating assigned to issuers vis-à-vis their track record at regular intervals and shall make their revision in the ratings public through their publications and website.

**10. Non-applicability of Certain Other Directions**

Nothing contained in the Non-Banking Financial Companies Acceptance of Public Deposits (Reserve Bank) Directions, 1998 shall apply to the acceptance of deposit by issuance of CP, by any NBFC in accordance with these directions.

11. All existing directions and guidelines stand superceded with immediate effect but shall continue to apply to CPs already issued from the corresponding dates of effect.

R. GANDHI, Executive Director

[ADVT. III/4/38/12-Exty.]

**Schedule I**

(See para 6.1.a)

**Proforma of Commercial Paper (CP)**

To be stamped as per the applicable rate in force  
in the State in which it is to be issued

(NAME OF THE ISSUING COMPANY/INSTITUTION)

SERIAL NO.

Issued at : \_\_\_\_\_ Date of issue : \_\_\_\_\_  
(PLACE)

Date of Maturity: \_\_\_\_\_ without days of grace.  
(If such date happens to fall on a holiday, payment shall be made on the immediate  
preceding working day)

For value received \_\_\_\_\_ hereby (NAME OF THE  
ISSUING COMPANY/ INSTITUTION) Promises to pay \_\_\_\_\_ or  
order on the (NAME OF THE INVESTOR) maturity date as specified above the sum of  
Rs. \_\_\_\_\_ (in words) upon presentation and surrender of this Commercial Paper to

(NAME OF THE ISSUING AND PAYING AGENT)

For and on behalf of \_\_\_\_\_

(NAME OF THE ISSUING COMPANY/INSTITUTION)

(AUTHORISED SIGNATORY/SIGNATORIES)

ALL ENDORSEMENTS UPON THIS COMMERCIAL PAPER MUST BE CLEAN AND  
DISTINCT. EACH ENDORSEMENT SHOULD BE WRITTEN WITHIN THE SPACE  
ALLOTTED.

Pay to \_\_\_\_\_ or order the amount within named.  
(NAME OF TRANSFEREE)

For and on behalf of \_\_\_\_\_

(NAME OF THE TRANSFEROR)

1. "

2. "

3. "

4. "

\*\*\*

4143 GI/12-6

**Schedule II**

(See para 6.3.d/9.II.b)

**IPA CERTIFICATE**

We have a valid IPA agreement with the \_\_\_\_\_  
(Name of Issuing Company/Institution)

2. We have verified the documents viz., board resolution and certificate issued by Credit Rating Agency submitted by [Name of the Issuing Company/Institution] and certify that the documents are in order. Certified copies of original documents are held in our custody.

3.\*We also hereby certify that the signatures of the executants of the attached Commercial Paper bearing Sr. No. \_\_\_\_\_ dated \_\_\_\_\_ for Rs. \_\_\_\_\_ (Rupees \_\_\_\_\_) (in words) tally with the specimen signatures filed by [ Name of the issuing Company/Institution ].

(Authorised Signatory/Signatories)

(Name and address of Issuing and Paying Agent)

Place :

Date :

\* (Applicable to Commercial Paper in physical form/Strike out if not applicable)

**Schedule III**

(See para 9.II.f)

**Details of Defaults on Repayment of CP**

Name of the issuer	Date of issue of CP	Amount (Rs. in cr.)	Due date of repayment	Initial Rating	Latest Rating	Whether the CP issue enjoyed a standby assistance/ credit back stop facility/ guarantee	If so, the name of the entity providing the facility indicated at Col. (7)	Whether the facility at Col.(7) has been honoured and payment made.
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)

[Authorized Signatory/Signatories]

**Schedule IV**

(See para 9.II.g)

**Reporting of buyback of CPs**

Date of trade	Issuer	ISIN	Date of Issue	Date of Maturity	Amount (Rs. in crore)	*Nature of Buyback

# Indicate whether the CPs have been extinguished by the Issuer

[Authorized Signatory/Signatories]